1789 की फ्रांसीसी क्रांति में दार्शनिकों की भूमिका

डॉ. के. के. पटेल

विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग

दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर
(छ.ग.)

फ्रांस के इतिहास की राजनैतिक और सामाजिक उथल.पुथल एवं आमूल परिवर्तन की अवधि थी जो 1789 से 1799 तक चली। बाद में नेपोलियन बोनापार्ट ने फ्रांसीसी साम्राज्य के विस्तार द्वारा कुछ अंश तक इस क्रान्ति को आगे बढ़ाया। क्रान्ति के फलस्वरूप राजा को गद्दी से हटा दिया गया। एक गणतंत्र की स्थापना हुई, खूनी संघर्षों का दौर चला और अन्ततः नेपोलियन की तानाशाही स्थापित हुई जिससे इस क्रान्ति के अनेकों मूल्यों का पश्चिमी यूरोप में तथा उसके बाहर प्रसार हुआ। इस क्रान्ति ने आधुनिक इतिहास की दिशा बदल दी। इससे विश्व भर में पूर्ण राजतन्त्र का ह्रास होना शुरू हुआ। नये गणतन्त्र एवं उदार प्रजातन्त्र बने।

महापरिवर्तनों ने पाश्चात्य सभ्यता को हिला दिया उसमें फ्रांस की राज्यक्रांति सर्वाधिक नाटकीय और जटिल साबित हुई। इस क्रांति ने केवल फ्रांस को ही नहीं अपितु समस्त यूरोप के जन.जीवन को अस्त.व्यस्त कर दिया। फ्रांसीसी क्रांति को पूरे विश्व के इतिहास में मील का पत्थर कहा जाता है। इस क्रान्ति ने अन्य यूरोपीय देशों में भी स्वतन्त्रता की ललक कायम की और अन्य देश भी राजशाही से मुक्ति के लिए संघर्ष करने लगे। इसने यूरोपीय राष्ट्रों सहित एशियाई देशों में राजशाही और निरंकुशता के खिलाफ वातावरण तैयार किया। जिसके कारण ही क्रांति में परिवर्तन हुआ।

मांटेस्क्यू (Montesquieu)(1689–1755ई.)

मांटेस्क्यू फ्रांस का एक राजनैतिक विचारक, न्यायविद तथा उपन्यासकार था। मांटेस्क्यू ने शक्तियों के पृथक्करण का सिद्धान्त दिया। फ्रांसीसी राजतंत्र की आलोचना करने वाला पहला प्रमुख व्यक्ति मांटेस्क्यू था।

वह एक उच्च कोटि का वकील और बोर्दो की संसद का न्यायाधीश था। उसने 1748 ई. में अपनी सुप्रसिद्ध रचना कानून की आत्मा (The Spirit of Low) का प्रकाशन करवाया। इसमें उसने फ्रांस के राजाओं के दैवी अधिकार के सिद्धांत की कटु आलोचना की तथा फ्रांस की सड़ी गली खोखली संस्थाओं की बडी व्यंग्यात्मक आलोचना की।

वह वैधानिक शासन तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता का जबरदस्त समर्थक था। उसका मानना था, कि निरंकुश शासन को समाप्त करने के लिये शासन के तीनों अंगों – कार्यपालिका, व्यवस्थापिका और न्यायपालिका के क्षेत्रों को पृथक–पृथक करना आवश्यक है। उसने शक्ति–पृथककरण के सिद्धांत का प्रतिपादन किया और बतलाया कि ऐसा करने से तीनों शक्तियाँ एक दूसरे के अधिकारों को सीमित रखेंगी तथा जनता के अधिकारों की रक्षा संभव हो सकेगी।

इसका जन्म 18 जनवरी 1689 ई. को हुआ था तथा मृत्यु 10 फरवरी 1755 ई. को हुई थी।

वाल्टेयर (1694–1788ई.)

वाल्टेयर 18 वीं शताब्दी के फ्रांसीसी दार्शनिक और लेखक थे। वाल्टेयर संगठित धर्म और पारंपरिक संस्थानों की आलोचना के लिए और स्वतंत्र भाषण और अन्य नागरिक स्वतंत्रताओं के उनके मुख्य समर्थन के लिए जाना जाता था। उनके समकालीन लोगों में जॉन लॉक, जोनाथन स्विफ्ट, अलेक्जेंडर पोप और जीन–जैक्स रूसो शामिल थे।

वाल्टेयर का जन्म 1694 में फ्रांस के पेरिस में एक मध्यम वर्ग के परिवार में हुआ था। उन्होंने एक शास्त्रीय शिक्षा को युवा के रूप में प्राप्त किया, लेकिन युवा वयस्कता के द्वारा अपने परिवार से दूर हो गया, इसके बजाय उनके गॉडफादर, अब्बे डे चाटेअनुफ के प्रभाव को पसंद किया, जिन्होंने मुफ्त सोच और कामुक जीवन जीया। यद्यपि वाल्टेयर को एक वकील बनने की उम्मीद थी, उन्होंने नाटकों, कविताओं, दार्शनिक ग्रंथों और ऐतिहासिक कार्यों को लिखने के बजाय उनके प्रयासों पर ध्यान केंद्रित किया। उनकी तेज बुद्धि के कारण फ्रेंच हलकों में प्रशंसा मिली।

1726–1729 से इंग्लैंड में अपने निर्वासन के दौरान, वाल्टेयर इंग्लैंड के संवैधानिक राजशाही के तहत बुद्धिजीवियों द्वारा आनंदित भाषण की तुलनात्मक स्वतंत्रता की सराहना करने आया। फ्रांस लौटने पर, उन्होंने लेट्रेर्स फिलोसफीक्स सुर लेस एंग्लैज प्रकाशित किया, जिसने अंग्रेजी प्रणाली की प्रशंसा की और उसे आगे बंदी बना दिया।

उन्होंने विज्ञान और कला में प्रगति को प्रोत्साहित किया, और सामाजिक सुधारों का प्रयास करने, निष्पक्ष परीक्षण, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, और धर्म की स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के लिए अपने साहित्य और सांस्कृतिक दायरे का इस्तेमाल किया। अंततः, वाल्टेयर ने लोकतंत्र पर प्रबुद्ध राजतंत्र के लिए तर्क दिया, लेकिन उनके दार्शनिक योगदान ने 18 वीं शताब्दी के अंत में दोनों अमेरिकी और फ्रेंच क्रांति के नेताओं पर जोरदार प्रभाव डाला।

जीन जैक्स रूसो

जीन जैक्स रूसो का जन्म 28 जून, 1712 को जिनेवा में हुआ। उसके पिता का नाम आइजक रूसो था। रूसो के प्रजनन के समय उसकी माता का देहान्त हो गया। उसका पिता एक घड़ीसाज था पर नृत्य में उनकी इतनी रुचि थी कि उसके विशेषज्ञ बनने की धुन में वह अपना व्यवसाय छोड़ चुका था। वह चरित्रहीन, अशिक्षित एवं चंचल मनोवृत्ति का था जो अपने बेटे को उचित शिक्षा न दे सका। उसका पिता रात–दिन भर रूसो से अश्लील और उच्छृंखल उपन्यास व कहानियाँ पढ़वाकर आनन्द प्राप्त करता था जिसका स्वाभाविक रूप से बच्चे की कोमल भावना पर अत्यन्त बुरा प्रभाव पड़ा।

जब रूसो केवल दस वर्ष का था उसके पिता ने झगड़े में एक व्यक्ति को बुरी तरह घायल कर दिया और दण्ड के भय में जिनेवा छोड़कर भाग गया। भागने से पहले वह रूसो को उसके चाचा के संरक्षण में छोड़ गया। दो वर्ष तक उसके चाचा ने उसे शिक्षा देने के लिए बाईसी नगर में रखा। इसके पश्चात् वह वापस जिनेवा लाया गया। यहां पर उसे खुदाई का काम सीखने के लिए एक व्यक्ति के पास रखा गया। वह व्यक्ति उसे कार्य सिखाने के लिए अत्यन्त निर्दयतापूर्वक पीटा करता। एक दिन रूसो अपने स्वामी की दुष्टता से तंग आकर घर से भाग निकला। इन्हीं दिनों मां की अनुपस्थिति में जिस किसी स्त्री ने उसका पालन–पोषण करना चाहा उसी के साथ रूसो ने प्रेम करना शुरू कर दिया।

रूसो इसके बाद फ्रांस पहुंचा और अपने जीवन के भरण–पोषण के लिए फ्रांस के कई स्थानों में निरुद्देश्य भ्रमण और आवारागर्दी करता रहा। उसने छोटी–मोटी चोरियाँ भी कीं। जो भी धन्धा किया उसे छोड़ दिया, जहां भी नौकरी की वहां से उसे निकाला गया। इन्हीं दिनों रूसो एक कैथोलिक पादरी के संपर्क में आया जिसने उसके साथ अत्यन्त उदारतापूर्वक व्यवहार किया। रूसो को वैफथोलिक धर्म में दीक्षित कर उसे ऐनसी में मेडम डीवारेन्स के संरक्षण में भिजवा दिया गया। इस महिला ने रूसो को शिक्षा प्राप्त करने के लिए तुरिन के एक मठ में प्रवेश करा दिया, परन्तु जब भी वह इस आवारा युवक से छुटकारा प्राप्त नहीं कर सकी। कुछ ही दिनों बाद रूसो वहां से भाग चला, किन्तु दर–दर ठोकरें खाने के बाद वह पुनः डीवारेन्स के द्वार पर आ गया।

सन् 1741 ई. में अपने कुछ मित्रों की सहायता से उसे वेनिस में फ्रांस के राजदूत के सचिव की नौकरी प्राप्त हो गयी, किन्तु 18 महीने की नौकरी के बाद उसे निकाल दिया गया। सन् 1744 में वह फिर से पेरिस आ गया। बदनाम रूसो को दोस्तों ने ठुकरा दिया। वह भीख मांगकर जीवन व्यतीत करने लगा। इन्हीं दिनों एक अनपढ़ धोबन येरेसी ने उसके सम्मुख अपना आंचल फैला दिया। उस महिला से रूसो के पांच बच्चे हुए जिनमें एक को भी उसने स्वीकार नहीं किया और सभी बच्चों को अनाथालय में भिजवा दिया गया। सन् 1770 ई. में अपनी वृद्धवस्था में रूसो ने उससे विवाह कर लिया।

रूसो को प्रथम पुरस्कार मिला और इस पुरस्कार ने उसे विश्वविख्यात बना दिया। रूसो ने अनेक ग्रन्थों की रचना की। सन् 1762 में राजनीति पर उसकी प्रसिद्ध रचना सोशल कॉन्टेक्ट तथा शिक्षा सम्बन्धी पुस्तक इमाइल का प्रकाशन हुआ। इमाइल में व्यक्त विचारों से पादरी लोग नाराज हो गए। अपने धर्म विरोधी और राजतन्त्र विरोधी विचारों के कारण उसकी मातृभूमि जिनेवा की परिषद् ने इन दोनों ग्रन्थों को जला डालने का तथा जिनेवा आने पर रूसो को बन्दी बनाने का आदेश प्रसारित किया।

फ्रेंच सरकार ने भी इसी कारण उसे गिरफ्तार करने का आदेश दिया। रूसो को अपने प्राण रक्षा के लिए फ्रांस से भागना पड़ा। प्रताड़ित और तिरस्कृत रूसो चिड़चिड़ा होकर पागलों की तरह फ्रांस, इंग्लैण्ड और स्विट्जरलैण्ड में घूमता रहा। उसके दिमाग की विक्षिप्ता बढ़ती जा रही थी। अपने मित्रों पर वह शक करने लगा कि वे उसे मार डालना चाहते हैं।

फ्रेंच राज्य क्रान्ति से 11 वर्ष पहले सन् 1778 में 66 वर्ष की आयु में उसका निधन हो गया।

रूसो की रचनाएँ :

1. **Discources on the Moral Effects of the Arts and Sciences 1751:** इसमें रूसो ने बताया है कि विज्ञान और कला ने मनुष्य की अवनति में क्या योगदान दिया है।
2. **Discources on the Origin of Inequality 1755 :** इसमें रूसो ने बताया कि समाज में विषमता कैसे उत्पन्न हुई।
3. **Economic Politique 1755 :** रूसो द्वारा लिखित यह लेखक दिदरो द्वारा सम्पादित विश्वकोश में प्रकाशित हुआ।
4. **Social Contract 1762 :** इसमें राजदर्शन सम्बन्धी गम्भीर विचारों का विवेचन है।
5. **Letters कम सं Montagne 1764।**
6. **The Emile 1762 :** इसमें शिक्षा सम्बन्धी प्रगतिशील विचारों का उल्लेख है।
7. **Confessions।**

रूसो के विचारों पर प्रभाव

रूसो की विचारधारा पर उसके युग की परिस्थितियों तथा अनेक राजनीतिक दार्शनिकों का प्रभाव दिखायी देता है। मोटे तौर पर हम रूसो पर दिखायी देने वाले प्रभावों को इन भागों में बांट सकते हैं

1. रूसो के विचार पर जॉन लॉक और प्लेटो का स्पष्ट प्रभाव है। बाकर ने लिखा है कि रूसो ने आरम्भ तो अवश्य ही लॉक से किया लौटकर वह प्लेटो के रिपब्लिक तक पहुंचा और फिर आगे बढ़कर हीगल की पृष्ठभूमि तैयार कर दी। प्लेटो और अरस्तू की भांति रूसो ने कहा कि 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, मनुष्य का पूर्ण जीवन केवल समाज में ही सम्भव है। राज्य की अधीनता मनुष्य इसलिए स्वीकार करता है कि राज्य उसका नैतिक नियन्त्रण करे और व्यक्ति को अन्तिम लक्ष्य की और ले जाने में सफल हो।

2. अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सोशल कान्टेक्ट' की रचना करते समय रूसो पर हॉब्स और लॉक के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। हॉब्स के प्रभाव के कारण रूसो के विचार तीव्र व्यक्तिवादी प्रतीत होते हैं और अन्त में वह निरंकुशतावाद का भी समर्थन कर बैठती है तथा लॉक के प्रभाव के कारण वह लोकतन्त्रा का समर्थक है तथा राज्य की स्थापना का आधार सहमति मानता है।

3. जिनेवा के वातावरण से भी रूसो प्रभावित हुआ है, इसलिए उसके राजनीतिक विचार स्थानिक रहे। वह छोटे नगर–राज्यों के पक्ष में था।

4. फ्रांस की तात्कालिक परिस्थितियों से भी रूसो प्रभावित हुआ। उस समय मुख्य प्रश्न यह था कि निरंकुश, राजसत्ता, सामन्तशाही और चर्च की अतियों से सामान्य जनता को कैसे राहत मिले। रूसो के सामने राजत्व की सम्प्रभुता के समर्थन के स्थान पर सामान्य जनता के लिए शासन की क्रूरता और चतुखदक शोषण से मुक्ति का प्रश्न था।

5. राज्य पर प्रभाव डालने वाले तत्व जैसे बाह्य परिस्थितियाँ, ऐतिहासिक परम्पराएँ आदि के सम्बन्ध में जब रूसो लिखता है तो उस पर मांटेस्क्यू का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।